रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग डी.के. कालेज
डुमराँव, बक्सर

भक्तिकाल -

"भक्ति का जो सोता दक्षिण की ओर से धीरे-धीरे उत्तर भारत की ओर पहले से ही आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला।" - रामचन्द्र शुक्ल

"भक्ति द्राविड उपजी, लाये रामानन्द।
परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खण्ड॥"
कबीरदास

"बिजली की चमक के समान अचानक समस्त पुराने धार्मिक मतों के अन्धकार के उपर एक नयी बात दिखायी दी। कोई हिन्दू यह नहीं जानता कि यह बात कहाँ से आयी और कोई भी इसके प्रादुर्भाव का कारण निश्चित नहीं कर सकता।"
- ग्रियर्सन

"देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके देव मन्दिर गिराए जाते थे, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती थी और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी न कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत न तो वे गा ही सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे चलकर जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक

स्थापित हो गया तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीति उलटफेर के पीछे हिन्दू जन समुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी सी छाई रही। अपने पौरुष से हताशा जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?"

रामचन्द्र शुक्ल

"लेकिन जोर देकर कहना चाहता हूँ कि अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी इस साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है।"

हजारी प्रसाद द्विवेदी

कबीरदास -

"झिलमिल झगरा झूलत बाकी रही न काहु।
गोरख अटके कालपुर कौन कहावै साहु॥"

"बहुत दिवस ते हिंडिया सुन्नि समाधि लगाइ।
करहा पड़िया गाड़ में दूरि परा पछिताइ॥"

"माधो मैं ऐसा अपराधी तेरी भगति होत नहीं साधी।

"तंत्र न जानूँ, मंत्र न जानूँ, जानूँ सुन्दर काया"

"हरि रस पीया जानिए, जे कबहूँ न जाय खुमार।
मैंमता घूमत फिरै, नाहीं तन की सार।।"

"दसरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
रामनाम का मरम है आना।।"

"आपुहि देवा आपुहि पाती।
आपुहि कुम आपुहि जाती।।"

"तत्व मसि इनके उपदेशा।
ई उपनीसद कहैं संदेसा।।"

"जागबलिक और जनक सवादा।
दत्तात्रेय वहै रस स्वादा।।"

"गहना एक कनक ते गहना,
न मह भाव न दूजा।
कहन सुनन कोई दुई करि पापिन,
इक मिजाज इक पूजा।।"

दिन में रोजा रहत हैं रात हनत हैं गाय।
यह तो खून वह बंदगी, कैसे खुसी खुदाय।।"

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, डी.के. कालेज